Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

महादेवी वर्मा के काव्य में दार्शनिक विचार

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

महादेवी वर्मा के काव्य में दार्शनिक विचार

Kavita Rani

M.Phil. in Hindi

शोध– आलेख सार – *महादेवी वर्मा जी प्रमुख छायावादी रहस्य साधिका, राष्ट्रसेविका जिन्हें आधुनिक मीरा कहें तो समीचीन होगा। इनके काव्य में संवेदना, भाव, संगीत एवं चित्र का अद्भुत संगम है। इनका समस्त काव्य वेदनामय है। इन्होने इसी वेदना को आध्यात्मिक वेदना अनाकर अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। साथ–साथ दार्षनिक विचारो की भी अभिव्यक्ति दी है। व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक मधुतिक्त अनुभूतियों में विभिन्न दर्षनों का प्रभाव देखा जा सकता है।*

मुख्य शब्द – *औपनिशदिक दर्षन, शड्दर्षन, उपनिशदित्तर दर्शन।*

----------X----------

औपनिशदिक दर्शन

;उप+नि+सद्द्ध का अर्थ है 'जो' ईष्वर के समीप पहुंचाये अथवा जो गुरू के समीप पहुंचाये। कर्म को अधिक महत्व प्रदान करते हुए महादेवी जी ने औपनिशदिक दर्षन को अपने जीवन में उतारा। काव्य अभिव्यक्ति है और अभिव्यक्ति अनुभूति को ही जीवित करने का माध्यम है। भगवत्गीत में स्पश्ट किया गया है कि विन्रमता, दम्भहीनता, अंहिसा, पवित्रता, आत्मसाक्षत्कार की महत्ता को स्वीकार करना ही ज्ञान है। इस ज्ञान को प्राप्त करना आपका उद्देष्य प्रतीत होता है।

ज्ञान यही है कि मनुश्य सबके सम्बन्ध में आत्मीय भावना रखें और प्रत्येक क्रिया कलाप में कर्मयोग का समावेष रखे। पषु–पक्षियों तक के साथ आपने अपने जीवन को आध्यात्मिक ;संवेदनाद्ध के स्तर पर पहुंचा दिया। दार्षनिक सत्य की खोज ही अध्यात्म का व्यावहारिक पक्ष है। इसी खोज में ईष्वर की अनन्य भक्ति करते हुए पुजारी से निवेदन करती है कि वह मन्दिर के द्वारों को न रोको। क्योकि परमात्मा को आत्मा से एक कर देना ही हमारा उद्देष्य होना चाहिए। वे लिखती हैं–

पुजारी दीप कहीं सोता है।

आने दो झंझा के झोके

खोलो रूद्ध झारोखे, मन्दिर

के न रहो द्वारों को रोकेघ

औपनिशंदिक दर्षन का प्रभाव महादेवी जी के जीवन और काव्य पर स्पश्ट है। महादेवी जी के विचार उपनिशदो से पूर्णतः भावित–प्रभावित थे।

शड्दर्शन

महादेवी जी की कविताओं में दार्षनिक भावना सर्वत्र व्याप्त है। काव्य में दार्षनिक–विचार परम्परा का रूप अति प्राचीत है किन्तु महादेवी जी ने अपने भावयोग से उस षुश्क दार्षनिकता को भी सरस बना दिया है। इनके काव्य पर न्याय, वैषेशिक, सांख्य, योग, मीमांसा, और वेदान्त का प्रभाव देखा जा सकता है। न्याय दर्षन की भांति महादेवी जी भी मानती है कि ईष्वर संसार के सृजनकर्ता, रहस्यमय षक्ति है, जो सृश्टि के समस्त क्रियाकलापों को नियमपूर्वक चलाती है। और वही षक्ति जीवन–दीप को जलाने अथवा बुझाने का कार्य भी करती है।–

सजनि कौन तम में परिचित सा

सुधि–सा छाया–सा आताघ

सूने में सस्मित चितवन से

जीवन–दीप जला जाता।

ईष्वर की दया और मार्ग दर्षन भी महादेवी अवष्य चाहती थी, जिससे वे अपनी आत्मा और विष्व के सम्बन्ध में तात्विक ज्ञान प्राप्त कर सके। ईष्वर से ऐसी कामना करते हुए लिखती है–

देव अब वरदान कैसा

बेध दो मेरा हृदय भाला बनूं प्रतिकूल क्या है

मैं तुम्हे पहचान लूं इस कूल तो उस कूल क्या है।

वैषेशिक दर्षन, न्याय दर्षन से समानता रखता है और मानता है कि कोई चेतना आत्मा सृश्टि का कारण है। महादेवी जी ने माना है कि समस्त सूनेपन में कोई एक हिलोर आती है। जो हलचल उत्पन्न कर सृश्टि का विकास करती है।

न थे जब परिवर्तन दिन रात

नहीं आलोक तिमिर थे ज्ञात

व्याप्त क्या सूने में सब ओर

एक कम्पन थी एक हिलोरघ

www.ignited.in

सांख्य– दर्षन ईष्वर की सृश्टि का राचयता नहीं मानता किन्तु महादेवी जी इससे सहमत नहीं है। वे ईष्वर के अस्तितव को स्वीकारती है। उन्होंने माना है कि कोई एक षक्ति है जो सम्पूर्ण सृश्टि के मूल में कार्य कर रही है। सांख्य–दर्षन का प्रभाव महादेवी जी पर नहीं था।

योगदर्षन की ही भांति महादेवी जी ने भी ईष्वर हो सर्वज्ञ, दोश रहित, पूर्ण और नित्य मानते हुए उसे सृश्टि का रचयिता स्वीकार किया है। आत्मज्ञान के लिए ईष्वर का ध्यान का उपदेष योग दर्षन है। उन्होने अपने जीवन का सर्वस्व ईष्वर को माना है। वे चाहती थी कि सृश्टि में व्याप्त ईष्वर पलभर को उनके निकट आ जाए।

'' अग–जग उनका कण–कण उनका

पल भर में निर्मम मेरे हों।''

पूर्व मीमांसा के अनुसार धर्म का आचरण कर्तव्य समझकर करना चाहिए। महादेवी जी ने अपने जीवन में धर्म का सदैव पालन किया है। अच्छे कर्म का भविश्य में अच्छा ही फल प्राप्त होता है ऐसा महादेवी जी का मानना था।

वेदान्त दर्षन अद्वैतवाद से अत्यन्त प्रभावित है। इसके अनुसार जीव और ब्रह्मा को एक ही मानती हैः–

'' मैं तुम से हूं एक, एक है

जैसे रष्मि प्रकाष''

शड्दर्शनो का प्रभाव महादेवी जी पर था। विषेशकर मीमांसा और वेदान्त से महादेवी जी अधिक प्रभावित जान पड़ती है।

उपनिशदित्तर दर्शन

बौद्ध, ईसाई, जैन, इस्लाम इत्यादि उपनिशदित्तर– दर्षन कहलाते है बौद्ध–दर्षन का निचोड़ चार आर्य सत्यों में निहित हैं 1. संसार में दुःख हैं 2. दुःख का कारण है 3. दुःख का अंत सम्भव है। तृश्णा को दूर कर दुःख दूर किया जा सकता है। महादेवी जी पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव था। बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति एक भक्तिमय अनुराग होने के कारण उनकी संसार को दुःखात्मक समझने वाली फिलासफी से मेरा असमय ही उनका परिचय हो गया था। दुःखवाद की पोशिका महादेवी जी बादल के समान ही मिट जाना चाहती है और तड़ित–कम्पन के समान ही हृदय को मिटा देने की चाह रखती है–

मैं मिदू ज्यों मिट गया धन

उर मिटे ज्यों तड़ित–कम्पन

महादेवी जी को दुःख के दोनो रूप प्रिय है, वह जो मनुश्य के संवेदनषील हृदय को सारे संसार से अविच्छिन्न बन्धन में बांध देता है दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतन का क्रन्दन है।

कह दे मां क्या अब देखूं।

मृदु रजत रष्मियों देखूं।

उलझी निंद्रा– पंखो में

चिन्ता का अभिनय देखू

महादेवी जी के काव्य में ईसाई–दश्रन का भी गहरा प्रभाव दृश्टिगोचर होता है। ईष्वर एक है इनकां भी यही विचार है। उन्होने अपने काव्य में आध्यात्मिक प्रिय की उपासना की गई है। कबीर की भांति महादेवी जी ने स्वयं के आध्यात्मिक प्रिय की प्रयेसी माना है। –

प्रिय चिरन्तन है सजनि

क्षण–क्षण नवीन सुहागिनी मैं।

इस्लाम धर्म एकेष्वरवाद समता एवं सादगी पर आधारित है। वह सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापी है। यह दर्षन कर्म पर बल देता है। महादेवी जी भी एकेष्वरवाद की समर्थक है। उपका निराकार प्रिय सदेव उनके निकट है। उनकी अभिव्यक्ति–

मैं तुमसे हूं एक, एक है

जैसे रष्मि प्रकाष

मैं तुमसे हूं भिन्न–2 ज्यों

धन से तड़ित विलास

निष्कर्षः–

महादेवी जी आजीवन दुःख और सुख का सन्तुलन बनाये रही। अंधविष्वासो एवं आडम्बरों से अपने धर्म का श्रृगांर न करने वाली महादेवी प्रिय ;ईष्वरद्ध के प्रति पूर्णतः समर्पित है। दार्षनिक विचारों के आधार पर महादेवी जी ईष्वर के समीप पहुंचना चाहती है। आत्मा और परमात्मा को एक कर देना चाहती है। उनकी अभिव्यक्ति के माध्यक से ईष्वर सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। वे न्याय दर्षन की तरह महादेवी जी ईष्वर को सर्वज्ञ, दोश रहित और पूर्व मानती है। इस प्रकार मैंने पाया कि महादेवी जी के काव्य पर दार्षनिक विचारों का प्रभाव है।

www.ignited.in